

قرآن اور کربلا

کुरآن اور کربلا



IMAMIA YOUTH ORGANIZATION
www.imamiayouth.in, Ph: 9336100559

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ (محمد: ٤)

اے ایمان والو! اگر تم اللہ کی مدد کرو گے وہ تمہاری مدد کرے گا
اور تمہارے قدم جمائے رکھے گا



या अइय्युहल लजीना आमनू इन तनसुरुल्लाहा यनसुरकुम
व युसब्बित अक़दा-म-कुम (मुहम्मद: 7)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे
तो वो तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमाए रखेगा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ (بقرہ ۱۵۶)

وہ لوگ کہ جب انہیں کوئی مصیبت پہنچتی ہے تو کہتے ہیں ہم تو اللہ کے ہیں اور ہم اسی کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں



अल्लज़ीना इज़ा असाबतहुम मुसीबतुन
क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (बक़रह: 156)

वो लोग कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती है तो कहते हैं
हम तो अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً (فجر: ۲۷، ۲۸)

اے اطمینان پانے والی جان! اپنے رب کی طرف پلٹ آ،
تو اس سے راضی ہے اور وہ تجھ سے راضی ہے



या अइय्यतुहन नफ़सुल मुत—म—इन्नह
इरजि—ई इला रब्बिकि राज़ियतम मरज़ीय्यह (फ़ज़्र: 27,28)

ऐ इतमीनान पाने वाली जान! अपने रब की तरफ़ पलट आ,
तू उससे राज़ी है और वो तुझसे राज़ी है।